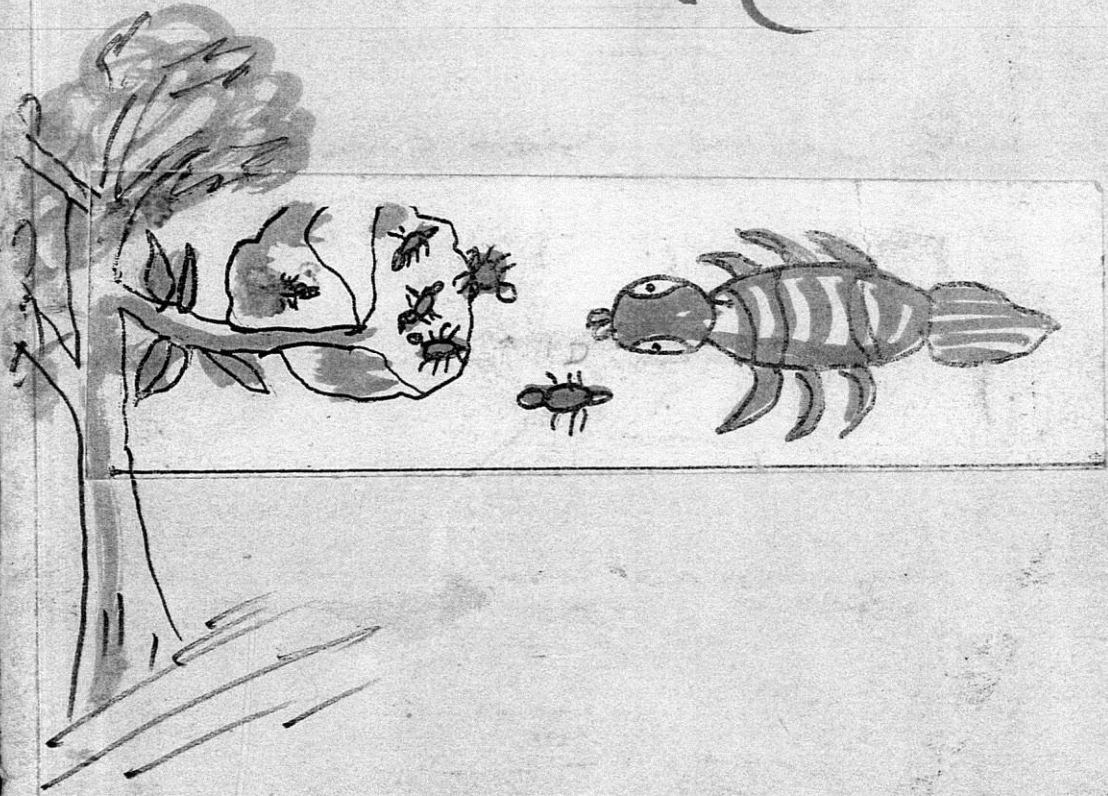


# चापड़ा चो कमाल ( हल्वी )



10

मंगलू आऊर सन्तू  
दुनो अच्छा संगवारी  
रला। दुई दिनले मंगलू  
स्कुल नी जाते रये तो  
संतू मंगलू चो घरे  
गेलो।

2



दुसरा दिने....  
मंगलू तुई दुई दिन  
ले काय काजे स्कूल  
नी ऐईस !....

मोके कुबे जर  
दरलिसे....

ऊनी दिनचो

सांज बेरा..

मथ तुचो काजे चापडा

जोर बनाउन आनलेसे

पिउन, दख जर परायेदे!

तेवे संगे शेजे स्कूल

जावां !....

आले तेवे पिठन

दखेदे !..

0 2 8

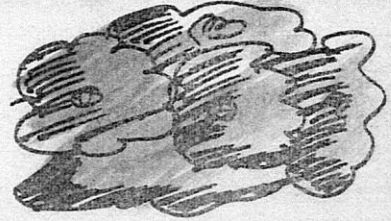
मंगल बुई बुई दिनेले  
काय काजी स्कूल नी  
ऐईस ।

MMMMM  
MMMMM  
MMMMM  
MM  
M



मम

ममम  
ममम  
मम



मम तुंचो काजि चापडा  
जोर बनाऊन आन-  
लेखे पिउन दख जर  
परायेदे ! तेबे संगे  
रोजे स्खल जावा !

आले तेबे  
पिउन दयेदे



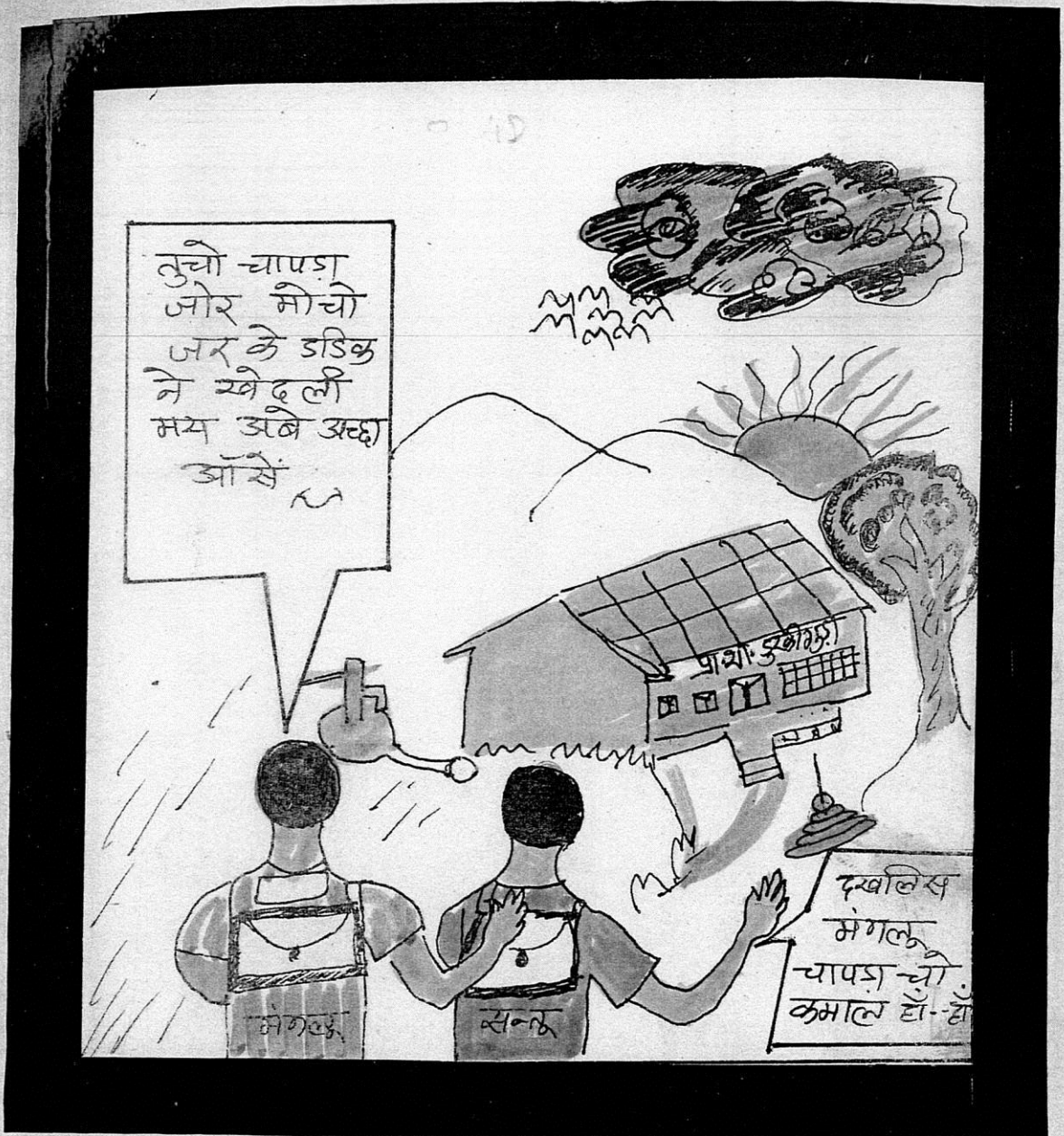
तीन दिन चो पाछे.

~~तुचो~~ तुचो चापड़ा जोर  
मोचो जर के डडिकने  
खेदली । मय अवे  
अच्छा आँसें ।

दसलिस मंगलू  
चापड़ा चो कमाल!  
हाँ! हाँ!.....



यो पाठे  
जोर



राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, रायपुर (छ.ग.)

कार्यक्रम समन्वयक - विद्या डांगे, SCERT, रायपुर

सहायक समन्वयक - भरत साव. डाईट. धर्मजयगढ़

मूल कथा - धरभू राम नागेश. प्रा. शा. डुरकी गुड़ा

भाषा - हल्दी (बस्तर)

### शब्दार्थ

दुनो = दोनो

संगवारी = दोस्त

पीऊन = पीके

संगे = साथ

जावा = जाले

रत्ना = रहते थे

हुई = दो

नी = नहीं

परायदे = भाग जायेगा

जर = चुरवार

काय = क्या

ऐईस = आले

चापड़ा जोर = लाल चीटों का तरी